International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 02(IV), April- June, 2025, pp. 87-93

पश्चिमी राजस्थान में भील जनजाति का अध्ययन

ममता*

विद्यार्थी, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

*Corresponding Author: mc*955782*@gmail.com II DOI: 10.62823/IJEMMASSS/7.2(IV).7858

सार

प्रकृति के साथ घनिष्ट रूप से जुड़ी हुई इस भील जनजाति का रोचक इतिहास हमें अपनी ओर आकर्षित करता है। इनकी कला–संस्कृति को जानने व समझने की उत्सुकता इन्हें और अधिक विस्तृत जानने में सहायता सिद्ध होगी। हालांकि भील जनजाति से संबंधित व्यवस्थित ऐतिहासिता अध्ययन की कमी देखने को मिलती है। विभिन्न ऐतिहासिक ग्रंथों में इनका उल्लेख मात्र ही हुआ है। इनके गौरवशाली इतिहास का व्यवस्थित अध्ययन होना आवश्यक है क्योंकि भील जनजाति भारत की सबसे प्राचीन जनजातियों में से एक है और इनकी विशिष्ट संस्कृति, वेशभूषा, खान–पान देश की विविधता को प्रदर्शित करती हैं। अतः इनमें सभ्य समाज के सांस्कृतिक जीवन का आदि स्वरूप दिखाई देता है। इनका जीवन सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से भरपूर होता है। भील जनजाति के जीवन में आने वाली हर समस्या से निदान पाने के लिए वे अपने देवी–देवता पर अटूट भरोसा रखते हैं। हालाँकि यह जनजातिय समाज काफी हद तक परम्परावादी, रुढीवादी सोच और अंध विश्वासों से घिरा हुआ है। कृषि कार्यों व पशुपालन में संलग्न होने के बावजूद भी यह जनजाति लोकगीत गाती हैं। मेलों व त्यौहारों का लुफ्त उठाती हैं। वर्तमान समय में कुछ युवा वर्ग अच्छी शिक्षा प्राप्त करके देश में अपनी सेवाएं दे रहे हैं, लेकिन यह मात्रा बहुत कम हैं। भील जनजाति आज के युग से काफी पिछड़ी हुई प्रतीत होती हैं। इनकी समस्याओं का समाधान करके सामाजिक – आर्थिक – राजनीतिक रूप से इन्हें सक्षम बनाने की दिशा में कदम बढ़ाया जाना चाहिए। भील जनजाति में पुरुषों के साथ–साथ महिलाएं भी घरेलू कार्य के अलावा कृषि व पशुपालन कार्यों में शामिल होकर पुरुष को सहयोग देती हैं। इस तरह भील जनजाति के लोग मिलकर खुशहाली के साथ प्रकृति के बीच अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

शब्दकोशः *भील, जनजाति, संस्कृति, परम्परा, जीवन शैली।*

प्रस्तावना

भील जनजाति राजस्थान की सबसे प्राचीन जनजाति हैं। मातृभूमि के साथ इनका घनिष्ठ रूप से जुड़ाव है। तथा आज भी यह प्रकृति के सबसे समीप हैं। इन जनजातियों की विशिष्ट परम्पराएँ तथा संस्कृति होती हैं। अनेक धार्मिक आस्थाओं और विश्वासों से परिलक्षित होता है कि जनजातीय सामाजिक जीवन सोलह संस्कारों से बंधा हुआ है। वर्ष भर विभिन्न प्रकार के मेले त्योहार और लोक नाट्य जैसे कार्यक्रमों का आयोजन इन जनजातियों द्वारा किया जाता है। संतुष्टि का इनके अंदर गहरा भाव है। इसीलिए बाहरी लोगो को जो अभावग्रस्त जीवन लगता है उसे ये जनजाति उत्सव के साथ अपनाती हैं। जनजातियों का जीवन सामाजिक सद्भावना से ओतप्रोत है। समाज के द्वारा बनाए गए नियमों का तथा बुजुर्गों का आदर वीरता सभी अपना कर्तव्य समझते हैं। बुजुर्गों के द्वारा ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए जाते हैं। ये जनजातियाँ ग्रामीण तथा पहाड़ी इलाकों में एकांत में निवास करना पसंद करती हैं तथा इनकी प्रकृति थोड़ी शर्मिली और मितभाषी होती है। इनकी

विशिष्ट बोलियों और वेशभूषा इनकी अलग पहचान बनाती हैं। स्वभाव से ये जनजाति भोली होती हैं और इनमें सहयोग की भावना शुरू से रही है। भारत देश के उत्तर पश्चिमी राज्य राजस्थान में भील जनजातियाँ निवास करती हैं। जैसे – भील, मीणा, गरासिया, मथौड़ी, डामोर इत्यादि। भील जनजाति मुख्यतः दक्षिणी तथा पश्चिमी राजस्थान में निवास करती हैं। राजस्थान के गौरवशाली इतिहास में भील जनजाति का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राजपूत शासकों के कंधे से कंधा मिलाकर आक्रमणकारियों और विद्रोहियों का सामना किया और मातृभूमि की रक्षा की। मातृभूमि तथा स्वामिभक्ति के लिए अपनी वीरता का परिचय देते हुए प्राण तक न्यौछावर करने से पीछे नहीं हटे। राजस्थान के कुछ भागों पर भील राजाओं का शासन भी रहा था तथा उन्ही राजाओं के नाम से रियासतों का नामकरण हुआ जैसे – कोटा (कोटिया भील राजा) बांसवाड़ा (बाँसियाँ भील राजा), टांटिया भील, मंडलिक भील इत्यादि कुछ महत्वपूर्ण भील शासकों के उदाहरण हैं। इसके अलावा भील जनजाति का राजपूतों (शासकों) से घनिष्ट संबंध रहा है। भील उनके सेवक की तरह कार्य करते थे तथा राजपूत शासक भी इन्हें अपने पुत्र के समान मानकर अपनी सेना में शामिल करते थे।

भील जनजाति का व्यवस्थित ऐतिहासिक अध्ययन किया जाना चाहिए जिसके माध्यम से वर्तमान समय में भील जनजाति के इतिहास को उजागर किया जा सके। भीलों का इतिहास जानने के लिए प्रमुखतः धार्मिक ग्रंथों और पुराणों जैसे– रामायण, महाभारत, शिवपुराण इत्यादि का अध्ययन किया जाता है लेकिन इन ग्रंथों में भी कुछ–कुछ जगह हो उल्लेख हुआ हैं। अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती। भील जनजाति का व्यवस्थित अध्ययन आवश्यक हैं। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक दरबारी इतिहास लेखन की प्रधानता रही जिसमें इस जनजाति का उल्लेख मात्र हुआ हैं। भील जनजाति के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए इनके इतिहास संस्कृति तथा सामाजिक परिवेश की सुरक्षा आवश्यक हैं। इस शोध का उद्देश्य राजस्थान के भीलों का ऐतिहासिक अध्ययन, सामाजिक और आर्थिक विकास तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इनकी स्थिति का विश्लेषण करना साथ ही भील जनजाति के प्रति सम्मान पूर्ण दृष्टिकोण निर्मित करता।

शोध समस्या

भील जनजाति अपनी विशिष्ट संस्कृति और परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध हैं। समय के साथ हुए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलावों ने भील जनजाति को भी प्रभावित किया है तथा भील जनजाति का अस्तित्व खोता हुआ दिखाई पड़ता हैं अतः इस शोध की मुख्य समस्या यह हैं कि किसी भी ग्रंथ में भील जनजाति का व्यवस्थित ऐतिहासिक अध्ययन नहीं मिलता। विभिन्न स्रोतों से थोड़ी जानकारी और कहीं – कहीं उल्लेख मात्र ही देखने को मिलता हैं। भील योद्धाओं के इतिहास को उजागर करना तथा इतिहास में उन्हें भी महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल और वर्तमान समय में भी प्रकृति से गहरा लगाव रखने वाली इस जनजाति के इतिहास को अनदेखा नहीं करना चाहिए इस पर विस्तृत कार्य करके इस जनजाति के विकास में सहयोग देना चाहिए। इस आधुनिकता के युग में भील जनजाति अपनी सांस्कृतिक धरोहर और परम्पराओं को किस हद तक संरक्षित किए हुए हैं। इस जनजाति के लोगों को इनके इतिहास को प्रमाणिक स्रोतों के माध्यम से जानने को मिलेगा तो इस जनजाति को स्वयं पर गर्व महसूस होगा और ये लोग भी इतिहास के उन महान पात्रों की तरह बनने का प्रयास करेंगे। यह सार्वभौमिक सत्य हैं कि जैसे विचार हमारे मन में आते हैं हम उसी तरह प्रतिक्रिया देते हैं। वर्तमान समय में यह जनजाति स्वयं को बहुत कमजोर या अस्तित्वहीन मानती हैं। विकास कार्यों में उतना बढ़–चढ़कर हिस्सा नहीं ले पा रहे जितना अन्य लोग ले रहे हैं। इस तकनीकी युग में प्रगति करने के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं लेकिन इस जनजाति में शिक्षा के प्रति उतनी जागरूकता नहीं हैं जितनी होनी चाहिए। इसलिए यह जनजाति और भी पिछड़ती जा रही हैं। इनका सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक विकास करने के लिए इन्हे अधिक से अधिक मात्रा में शिक्षा से जोड़ना चाहिए। हालांकि हमारे देश तथा राज्य की सरकारें बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं। इनके विकास के लिए आवास तथा बिजली और पानी की सुविधाएँ की जा रही हैं। महिलाओं के जीवन स्तर को ठीक करने के लिए हर घर में गैस कनेक्शन की सुविधा की जा रही हैं। लेकिन आज भी शिक्षा के लिए जितना कार्य किया जाना चाहिए वास्तविक

रूप में उतना कार्य नहीं हो रहा। जनजातीय विकास के लिए समग्र विकास की अवधारणा के साथ आगे बढ़ सकते हैं। समय के साथ परिवर्तन आवश्यक हैं किंतु अपनी संस्कृति और ऐतिहासिक महत्व को भी बनाए रखना होगा।

राजस्थान के मरुस्थल तथा पहाड़ी, मैदानी भागों जैसे दुर्गम स्थलों पर निवास गरने वाली इस भील जनजाति को जंगलों की लकड़ी, फल, फूल तथा अन्य औषधियों से अपनी आजीविका चलाने में मदद मिलती हैं तथा खेती करना साथ ही पशुपालन भी जीवन निर्वाह के प्रमुख साधन हैं। इन जनजातियों में परिवार नियोजन की कमी देखने को मिलती हैं भील जनजाति में छोटे उम्र में ही बच्चों को घरेलू कार्यो में लगा दिया जाता है और खेतों में कार्य करना भी सीखाया जाता हैं जिससे ये शिक्षा की कमी के कारण कई बार आपराधिक गतिविधियों में भी संलग्न हो जाते हैं. इनसे निवारण पाने के लिए तथा भील जनजाति के विकास के लिए बेहतर योजनाएं बनाकर इन्हे जागरूक करने की आवश्यता हैं जिससे ये जनजाति योजनाओं का लाभ उठाकर स्वयं की प्रगति कर सके। भील जनजाति के ऐतिहासिक अध्ययन के माध्यम से इनमें नई चेतना जागृत की जा सकती है और इस प्रकार इस शोध के माध्यम से भील जनजाति को बेहतर ढंग से जानने तथा उनके ऐतिहासिक महत्व को समझने का अवसर मिलेगा और ये शोध भील जनजाति के लोगों के जीवन को नई दिशा देगा।

उद्देश्य

यह शोध राजस्थान में भील जनजाति की संस्कृति, इतिहास, सामाजिक संरचना और उनकी आर्थिक स्थिति को समझने में मदद करेगा। तथा उनकी पहचान और मूल्यों को संरक्षित करेगा। जिससे इस जनजाति गौरवशाली इतिहास को आगे बढ़ाया जा सकता हैं' भारत देश मैं भील जनजाति प्राचीन सभ्यता को अपने लोक गीत नृत्य, कथाओं के माध्यम से आज भी जीवित रखे हुए हैं। प्रकृति के बीच रहने वाली इस जनजाति के माध्यम से सतत् विकास जैसे लक्ष्यों को हासिल करना आसान हो जाएगा। इसके माध्यम से प्रकृति की भी रक्षा होगी और जनजातियों का भी विकास संभव होगा। इस शोध का मुख्य उद्देश्य भील जनजाति जो राजस्थान के पश्चिमी जिलों में निवास करती है उनके इतिहास का क्रमबद्ध अध्ययन करना तथा वर्तमान स्थिति को समझते हुए भविष्य की संभावनाओं को खोजना और इनके विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान देना। पश्चिमी राजस्थान में भील जनजाति के लोग जिन समस्यों और सकंटो का सामना कर रही हैं उनकी पहचान कर, निवारण के विकल्प दूढने चाहिए। जिसमे यह शोध सहायक सिद्ध होगा। इसके माध्यम से भील जनजाति की वास्तविक स्थिति जानने में मदद मिलेगी, जिससे इनके लिए कल्याणकारी नीतियों और योजनाएँ लायी जा सके जो भील समाज के विकास में सहायता तथा मार्गदर्शक के रूप में इन्हें सही दिशा में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करेगी। भील जनजाति अपनी मेहनत और लोक कला के लिए भी जानी जाती है लेकिन वर्तमान समय में भील जनजाति की इस लोक कला को सरक्षण व बढावा देना अति आवश्यक है क्योंकि धीरे–धीरे से लुप्त होती जा रही हैं इसका कारण वर्तमान में भीलो की दयनीय स्थिति है क्योंकि जितना ये प्रकृति से दूर होते जा रहे? उन्हें अपनी आजीविका चलाने के लिए मजदूरी करनी पड़ती है तथा बेरोजगारी का सामना भी करना पड़ रहा हैं। इन समस्याओं का समाधान करके इनकी स्वाभिमानी जीवनशैली इन्हे पुनः लौटानी चाहिए तथा शिक्षा से जोड़कर इन्हे भी अच्छा जीवन दिया जा सकेगा। इनके ऐतिहासिक अध्ययन के माध्यम से इनमें नई चेतना जागृत करना तथा नैतिम मूल्यों के माध्यम से इनके जीवन को नई दिशा देना।

यह शोध भील जनजाति के सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों को संवर्धित करने तथा भीलों की जीवन शैली और संस्कृति के बारे में अधिक जानने का अवसर प्रदान करेगा और राजस्थान में भील जनजाति के ऐतिहासिक गौरव को बढ़ावा देगा तथा उनमें सम्मान और प्रतिष्ठा की भावना जगाएगा। बेहतर नीति निर्माण करके उन्हें लागू करना इस जनजाति के विकास में सहायक सिद्ध होगा।

भीलों की उत्पति तथा इतिहास

पौराणिक बाल – रामायण तथा महाभारत में भील जनजाति का उल्लेख देखने को मिलता हैं, भील जनजाति के संबंधित सर्वाधिक जानकारी शिवपुराण में प्राप्त होती हैं। इस प्रकार देखा जा सकता हैं कि भील

जनजाति सबसे प्राचीन जनजातियों में से एक हैं। श्रीमद्भगवद् पुराण में अंग के शरीर से उत्पन्न निषाद संतान को ही गिरिजन या वनवासी बताया गया हैं। महाभारत में जिस एकलव्य का नाम आता है वह आदिवासी भील था। भीलों का वर्णन रामायण में भी मिलता है जिसमें माता शबरी भीलनी ने भगवान राम की भक्ति की तथा राम जी ने उनके द्वारा साप्रेम भेंट किये गये और खायें। भीलों की उत्पति के विषय में शिव पुराण में बताया गया की भील पार्वती के भाइयों के वशंज हैं। महाभारत में भिल्ल शब्द का प्रयोग हुआ हैं। महाभारत के इतिहास को वर्तमान इतिहासकार मतैक्यता के साथ 5000 वर्ष से प्राचीन मानते हैं। अतः महाभारत से पूर्व के इतिहास के आधार पर यदि ये विश्लेषण किया जा रहा हैं तो इतिहासकारों को यह स्वीकारना होगा कि उनके पास इतना सुरक्षित व प्रमाणिक इतिहास हैं। और महाभारत में भिल्ल शब्द का प्रयोग प्राचीन जाति के रूप में हमें मिलता है जो शास्त्रोपजीवी थे। एकलव्य इसका सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है। उसकी योग्यता को महाभारत के आदिपर्व में विस्तार के साथ प्रकाशित किया है। यहीं नहीं युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में भी एकलव्य को विशेष अतिथी के रूप में आमंत्रित किया गया था जिसकी जानकारी भी दी गई हैं। एच. एच. विल्सन के अनुसार महाभारत में उल्लेखित जनजातियों में वो पुलिंद जनजाति में सम्मिलित हैं जो कि वनवासी थे। किंतु ऐसा प्रतीत नहीं होता अपितु यहीं दृष्टिगोचर होता हैं कि भिल्ल या भील वनवासी व स्थायी तथा मूलनिवासी थे। भारतीय परम्परा व इतिहास के साक्षी ग्रंथ पुराण है। इनमें भारतीय जातियों की उत्पति विषयक प्राचीन इतिहास लिखा गया है। भील समाज उथल–पुथल तथा अशांति के समयान्तराल में कठिनाइयों के साथ संघर्षरत हैं। इस समय काल में मराठों के आक्रमणों व तत्पश्चात् राजस्थान के इस क्षेत्र में अंग्रेजो के आगमन व परिणामस्वरूप नयी उपनिवेशवादी व्यवस्था के अन्तर्गत भीलों के जीवन में अनेक बदलाव दिखाई देते हैं। उन्हें अभावों व कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वर्तमान समय में भी ये समाज कठिनाइयों के साथ जीवन यापन करता दिखाई देता हैं। इनके इतिहास और इनकी संस्कृति का संरक्षण करना तथा संस्कृति को आगे बढाना भील जनजाति के लिए महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा।

भीलों में उत्पत्ति विषयक कई पौराणिक इतिहास प्राप्त होता है। इस पौराणिक इतिहासों का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि भील मूलतः भारत के ही निवासी हैं। धर्म की दृष्टि से देखा जाये तो भारत में प्राचीन काल से प्रचलित सनातन धर्म जो कि वर्तमान में हिंदू धर्म से जाना जाता है, उसी धर्म से संबंधित है। भीलों के मुख्य आराध्य शिव हैं। साथ ही भील जनजाति में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक प्रकृति का अत्यधिक महत्व है। और भील समाज द्वारा आज भी प्रकृति की पूजा की जाती है। जिस क्षेत्र में ये निवास करते हैं वे क्षेत्र मुख्य शहरों से दूर तथा एकांत होते हैं तथा ये समाज पारंपरिक रिति–रिवाजों के साथ अपने जीवन को सुखमयी बनाते हैं। ऐसे में भीलों को निम्न कोटी का बताना भील समाज के वीरोचित गुणों के साथ अन्याय हैं। भील जनजाति का इतिहास संघर्ष भरा है। इन्होने मानव सभ्यता को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है किंतु फिर भी इतिहास लेखन में से उपेक्षा के शिकार रहे। इतिहास जो व्यवस्थित हो उसके अभाव में भीलों के शौर्य की कहानी अतीत के अन्धकार में विलीन हो गई। फिर भी कुछ इतिहासकारों ने इतिहास लेखन का अच्छा प्रयास किया है। स्वतंत्रता के पश्चात् कई राज्य सरकारों के अलावा निजी संस्थाओं ने भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष साक्ष्यों के आधार पर इतिहास लेखन का कार्य किया है।

पश्चिमी राजस्थान में भीलों का जीवन – भील जनजाति मुख्यतः पश्चिमी राजस्थान के जैसलमेर, जोधपुर, फलोदी, बाड़मेर, पाली, सिरोही जिलों में निवास करती हैं। और इन जिलों के भी ग्रामीण इलाकों व ढाणियों में भील जनजाति निवास करती हैं। भील लोगों के गांव के निर्माण करने का तरीका अनोखा है। ये लोग पाल कहे जाने वाले इलाके में निवास करते हैं जो बिखरे हुए झोपड़ों का समूह होता है। ये झोपड़े अलग–अलग टेकरियों पर बने होते हैं। एक झोपड़े की सीमा के भीतर आने वाले खेत, पहाड़ तथा जंगल का मालिक वही भील होता था। जिसका वह झोपड़ा या घर होता था। वर्तमान समय में भील समाज के घरों की संरचना में थोड़ा परिवर्तन देखने को मिल रहा है। वे भी सामान्य लोगों की तरह पत्थर के निर्मित मकानों में निवास करते हैं। इनकी संख्या वाम हैं अधिकांश भील जनजाति के लोग झोपड़ा बनाकर तथा गाय के गोबर से आँगन को बनाते हैं। तथा घर से कुछ दूरी पर पानी का कुआँ बनाया जाता है। तथा उसमें वर्षा जल एकत्र करके उपयोग

करते हैं। खान–पान में अत्यधिक मात्रा में बाजरा, जौ, मक्का इत्यादि खाद्यान अनाजों का उपयोग करते हैं। साथ ही पेड़ (खेजड़ी) से मिलने वाली कर तथा सांगरी भी विशेष रूप से सब्जियों में इस्तेमाल करते हैं।

- **भीलों की आर्थिक स्थितिः** भील जनजाति जीवन निर्वाह के लिए खेती तथा पशुपालन का कार्य करती हैं। इसके साथ–साथ मजदूरी करके अपने परिवार का भरण–पोषण करते हैं। इस जनजाति में पुरुषों के साथ–साथ महिलाएँ भी मजदूरी करती हैं और घर की जिम्मेदारियाँ भी निभाती हैं। इस जनजाति के लोग उच्च सेवाओं में न के बराबर हैं। इसका प्रमुख कारण शिक्षा की कमी तथा इस जनजाति में जागरूकता की कमी। भील जनजाति में अधिकांश लोग बेरोजगारी का दंश झेल रहे हैं। उचित मूल्य नहीं मिलना भी इसका एक कारण है। लेकिन वर्तमान समय में कुछ शहर में निवास करने वाले जनजातीय लोग स्वयं रोजगार हेतु व्यवसाय कर रहे हैं तथा शिक्षा प्राप्त करके निजी संस्थानों में तथा कुछ सरकारी संस्थानों के साथ मिलकर अच्छा कार्य कर रहे हैं।
- **भील जनजाति की कला और संस्कृति –** इनमें सांस्कृतिक जीवन में त्यौहारों को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। जनजातीय संस्कृति में उनके मेले, तीज व गणगौर जैसे त्यौहार प्रमुख होते हैं। इनके मेलों में लोक कला और संस्कृति का साक्षात् दर्शन होता है। विशिष्ट वेशभूषण तथा आभूषण पहन कर ये जनजातियाँ अपनी संस्कृति को बढ़ावा दे रही हैं। अलग–अलग स्थानों से लोग इन मेलों का लुप्त उठाने भी आते हैं। उदा. बेणेश्वर मेला, मालाणी क्षेत्र में पशु मेला इत्यादि प्रमुख हैं।
- **भील जनजाति की धार्मिक मान्यताएँ –** धर्म का संबंध टोटम से होता है। धर्म में इनकी गहरी आस्था होती है तथा ये लोग कोई भी महत्वपूर्ण काम करने से पहले देवी–देवताओं की आराधना करते हैं। और अपने देवताओं को खुश करना सबसे जरूरी मानते हैं। इस जनजाति में शुभ और अशुभ पर विश्वास किया जाता है तथा इनका मानना होता है कि जो व्यक्ति 'भोपा' देवता की आराधना करता है उसमें देवता का भाव आता है। और भोपा जो बताते हैं उसी अनुसार ये लोग कार्य करते हैं। इस जनजाति में कुछ लोग देवी–देवताओं को पशु बलि देता है। जिसे ये लोग आवश्यकता समझते हैं। इनमें बकरे की बलि देना प्रमुख माना जाता है। इनके मुख्य देवता और देवीयों में आशापुरा माता, भैरू जी, कालका माता, दुर्गा माता, शिव–पार्वती की पूजा अर्चना होती है। भीलों में पाबूजी लोकदेवता की फड़ सबसे लोकप्रिय है। इस समय भील समाज अपने गांव के सभी लोगों को बुलाकर यह कार्यक्रम करवाता है तथा सभी मिलकर भोजन बनाते हैं। तथा इसे उत्सव की तरह मनाते हुए सब मिल–जुलकर रहते हैं। भीलों को धार्मिक विश्वास की दृष्टि से देखा जाए तो स्पष्ट है कि सनातन वैदिक हिंदू परम्परा का ही अंग है। पाश्चात्य जगत के विद्वानों को बौद्धिक स्तर पर यह तथ्य क्यों नहीं दिखाई दिया यह अन्वेषण का विषय है। अतः कहा जा सकता है कि भील जनजाति भारतीय सनातन (हिंद धर्म) का अभिन्न अंग है। इन्हें इतिहास में इसी रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।
- **भील जनजाति में किये जाने वाले प्रमुख संस्कार –** ये संस्कार प्रथा प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय में भी भील जनजाति में मनायी जाती हैं। भील जनजाति के लोग मिलकर इन संस्कारों को सम्पन्न करते हैं। सर्वप्रथम इनमें बच्चे के जन्म पर सूर्य पूजन का संस्कार किया जाता है तथा इस संस्कार में गुड़ तथा लड्डू बाँटे जाते हैं। इसका उद्देश्य सभी के घर में भी इसी तरह खुशियाँ आए उन घरों में भी बच्चा आए। इस कार्यक्रम के दौरान ही बच्चे का नामकरण भी किया जाता है। इसलिए इसे नामकरण संस्कार की भी संज्ञा दी जा सकती है। इसके साथ ही भील जनजाति में जातकर्म संस्कार भी बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसमें भीलों द्वारा अपने देवता को अधिकाशतः भैरुजी तथा खेतपाल जी को बलि दी जाती हैं। विवाह संस्कार भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके अलावा भीलों में मृत्यु संस्कार में बारह दिन की बैठक रखी जाती है तथा उसके परिवार को सहारा दिया जाता है। भीलों में अंतिम संस्कार शव को जलाकर किया जाता है तथा मृतक की अस्थियों को गंगा तथा माही नदी में बहा दिया जाता है। ऐसा माना जाता है कि जल में अस्थियाँ प्रवाहित करने से मृतक की आत्मा को ठंडक तथा शांति मिल जायेगी।

- **भील जनजाति की प्रमुख समस्याएँ –** पश्चिमी राजस्थान में रहने वाली इस जनजाति का जीवन चुनौती भरा है। हालांकि मानव जीवन में समस्याओं का आना आम बात है पर जब समस्याओं के पहाड़ टूटने लगते हैं तो यह एक चिंता का विषय बन जाता है। भील जनजाति के संबंध में यह बात स्पष्ट रूप से लागू होती नजर आती है। भील जनजाति के लोग, जो मिल जाए, उसी में संतुष्ट हो जाते हैं। यह जनजाति जमाने की इस दौड़ का हिस्सा बनती दिखाई नहीं देती। अभावग्रस्तता और कठिन परिस्थितियों से भरा जीवन है। इनका। आदिवासी सदियों से निम्नतम स्तर का जीवन व्यतीत करते हुए आ रहे हैं और सामान्यतः उन्हें अपने जीवन से कोई शिकायत या असंतुष्टि नहीं होती। लेकिन प्रकृति ही भीलों का सबसे बड़ा साधन है। ये पूरी तरह प्रकृति पर ही निर्भर हैं। पश्चिमी राजस्थान के भील भी जंगलों पर ही आश्रित थे, परंतु विभिन्न विकास परियोजनाओं के दौरान जंगलों की कटाई हुई जिससे भीलों को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ा। तथा इनके सामने कई समस्याएँ खड़ी हो गयीं जैसे मजदूरी के दौरान श्रम शोषण, ऋणग्रस्तता, महाजनों द्वारा अत्यधिक ब्याज वसूलना, तथा इनके खेत व जमीनों का सौदा हो गया। और वनों की कटाई से प्रमुख समस्या वर्षा जल में कमी होना व सूखे की समस्या का उत्पन्न होना। इसके अलावा भीलों की सामाजिक समस्याएं – अशिक्षा, अंधविश्वास, कुरीतियाँ व कुप्रथाएं, भाषा की समस्या, जागरूकता का अभाव, प्रमुख हैं। इन समस्याओं का समाधान पुनः पेड़ लगाकर जंगल बनाना और भील जनजाति के लोगों को शिक्षा से जोड़ना, उचित रोजगार उपलब्ध करवाना, इनकी कला व संस्कृति को संरक्षण देना। जो वर्तमान समय में सतत विकास जैसे लक्ष्य को हासिल करने में भी कारगर सिद्ध होगा।
- **भील जनजाति के जीवन में बदलाव की अपेक्षाएँ –** प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक भील जनजाति ने स्वयं में वांछित बदलाव किए हैं किंतु आज भी शिक्षा की कमी होना इनके विकास में प्रमुख बाधा है। सरकार द्वारा जो सहयोग दिया जा रहा है उसे स्वीकार करते हुए समाज को खुद भी अपने विकास के लिए कार्य करना चाहिए। अपने गौरवशाली इतिहास को याद रखते हुए आज भी जीवन को सफल बनाने के लिए तत्पर रहना चाहिए। भील जनजाति को अपनी कला–संस्कृति को सुरक्षित रखते हुए आज के युग के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ना चाहिए। यह सब कुछ संभव है, शिक्षा इसका मुख्य स्तंभ है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के दौरान ज्ञात होता है कि भील जनजाति का इतिहास गौरवशाली सबसे प्राचीन तथा रोचक व प्राकृतिक वातावरण से पूर्ण रहा हैं। भील जनजाति की विशिष्ट कला संस्कृति और उनके रहने का ढंग सोचने पर मजबूर कर देता हैं कि भील जनजाति अभावग्रस्त होते हुए भी कैसे स्वयं को स्वाभिमान तथा संतुष्टता से जोड़े हुए हैं। ये लोग अपने जीवन को खुशहाली के साथ व्यतीत करते हैं और हमारे जगलों व प्राकृतिक स्थलों के रक्षक के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किंतु वर्तमान समय में बदली परिस्थितियों एवं भारतीय शासन व्यवस्था के बदलावों, ब्रिटिश साम्राज्य का अधिपत्य आदि ऐसे कारण बनकर सामने आए जिनसे भील समाज का अस्तित्व ही सकंट में आ गया, इतिहास के पन्नों में भील समाज में कई महान शूरवीर योद्धाओं ने अपनी अलग पहचान स्थापित की थी। इन महान शूरवीरों में मुगल, मराठा और ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ों को कमजोर करने की ताकत थी। लेकिन इनका विस्तृत व व्यवस्थित ऐतिहासिक अध्ययन नहीं मिलता हैं। वनो की राजा कही जानी वाली जनजाति समय के साथ–साथ अपने अस्तित्व को खोती जा रही है और गरीबी, रोटी कपडा मकान के लिए अपना जीवन अभावों में काट रही हैं। व भील समाज अवहेलना का भी शिकार हो रहा हैं अतः कहा जा सकता है कि भारतीय जनजातीय सभ्यता के स्तंभ जो कभी कुशल शिकारी, महान सैनिक और देशभक्त हुआ करते थे। वे आज गरीब व दयनीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हाँलाकि राष्ट्रप्रेम आज भी खूब हैं किंतु इनकी स्वतंत्र स्थिति और स्वाभिमान में कमी हुई है इसका प्रमुख कारण बदले समय के साथ यह जनजाति स्वयं को परिवर्तीत नहीं कर पाई इसलिए विकास के स्तर पर ये पिछड़ी हुई रह गई। भील जनजाति के अस्तित्व को बचाना आवश्यक हैं साथ ही साथ इनके इतिहास को उजागर करना

चाहिए। भील जनजाति की विशिष्ट संस्कृति और रहन–सहन हमारे सभ्य समाज को अनोखी पहचान प्रदान करता है तथा हमारे देश की विविधता को सुशोभित करता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद्र : उदयपुर राज्य का इतिहास भाग I व II राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर (नवीनतम संस्करण) 1994
2. नायता, टी. बी : The Bhils (भारतीय आदिम जाति सेवक संघ 1956)
3. पाठक, डॉ. शोभनाथ (1986) भीलों के बीच बीस वर्ष
4. नैणसी, मुहणौत : मारवाड़ रा परगना री विगत भाग । (1969) (फतेहसिंह एम. ए. डी. लिट.) राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।
5. गहलोत, जगदीशसिंह : राजपूताने का इतिहास, पहला भाग, हिंदी साहित्य मंदिर जोधपुर प्रथम संस्करण 1937
6. जैन, प्रेम सुमन : कुवलयमाला का सांस्कृतिक अध्ययन, प्राकृत शोध संस्थान वैशाली 1975
7. जैन, श्रीचंद : वे वनवासी भील, वनवासी भील और उनकी संस्कृति रोशनलाल जैन एड सन्स, जयपुर द्वितीय संस्करण 1974
8. भाणावत डॉ. महेंद्रः उदयपुर के आदिवासी, भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर 1993
9. मेहता, जोध सिंह, आदिवासी भील, साहित्य संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ उदयपुर 1954
10. सोमदेव : कथासरित सागर, निर्णय सागर प्रेस मुम्बई, चतुर्थ संस्करण 1980
11. शर्मा उत्सवलाल : (संपा.) पद्मभूषण भोगीलाल पांड्या स्मृतिग्रंथ भाग । रियासत डूंगरपुर में राजनैतिक संघर्ष, गांधी आश्रम, डूंगरपुर 1986
12. भट्टर राजेंद्र शवार : महाराणा प्रताप नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, द्वितीय संस्करण नई दिल्ली 1990
13. कोठारी (डॉ.) (संपा.) स्वतंत्रता आन्दोलन में मेवाड़ का योगदान साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर 1991
14. वीर विनोद श्यामलदास पुनः मुद्रित 1987 दिल्ली।

❖◆❖